HW

Date
Page

ताई पाठ का सारांश

लेखक ने इस कहानी के माध्यम से यह बताया है कि किस प्रकार बच्चों के प्यार से कोई अपनी पुरानी धारणा को भूल जाता है। इस कहानी में बाबू रामजीदास की पत्नी श्रीमती रामेश्वरी देवी हैं। वह निःसंतान हैं। बाबू रामजीदास अपने भाई कृष्णदास के पाँच वर्षीय पुत्र मनोहर को बहुत प्यार करती हैं। इसे प्राणों से भी प्यारा मानते हैं, पर श्रीमती रामेश्वरी देवी को यह सब बिलकुल अच्छा नहीं लगता, वह मनोहर को दूसरे का बेटा और पराया धन कहती हैं। उन्हें रामजीदास बार-बार समझाने का प्रयास करते हैं, परंतु रामेश्वरी देवी मनोहर को अपनी संतान की तरह मानने को तैयार नहीं होती। प्रेम की भाषा तो बच्चे भी अच्छी तरह समझते हैं। अपनी ताई रामेश्वरी देवी के व्यवहार से मनोहर भी खुश नहीं रहता हैं। वह हर बार अपनी मीठी बोली से रामेश्वरी देवी को खुश करने की कोशिश करता है। इतना सब होते हुए भी रामेश्वरी में एक माँ के सभी गुण विद्यमान थे। वह केवल इस बात से चिढ़ती थी कि अपनी संतान न होते हुए भी उसके पति मनोहर को प्राणो से अधिक मानते थे। किंतु एक ऐसी घटना घटती है जिसके बाद से रामेश्वरी देवी मनोहर और उसकी बहन चुन्नी दोनों को बहुत प्यार करने लगती हैं और वे दोनो -- रामेश्वरी के प्राणधार बन जाते हैं।